8

मुख्य वचनः 1 कुरिन्थियों 11:23-25

आज इसका मनाया जाना

प्रभु-भोज का मनाया जाना बाइबल की शिक्षा के आधार पर होना चाहिए। परमेश्वर ने प्रगट कर दिया है कि इसमें क्या होना चाहिए और इसके कब लिया जाना चाहिए, पर उसने यह नहीं बताया कि इसे कैसे मनाया जाना चाहिए। इसके बारे में तो निर्देश दिए गए हैं कि क्या किया जाना आवश्यक है पर कोई आज्ञा या नमूना नहीं दिया गया, इस कारण भोज को लेने का ढंग मनुष्य की समझ और प्राथमिकता पर छोड़ दिया जाता है।

चीज़ों को लेना

रोटी और दाख का रस खरीदे जा सकते हैं या घर में बनाए जा सकते हैं। यह निर्णय मण्डली के अगुओं पर छोड़ा जाता है। खरीदी जाए या घर में बनाई गई हो, रोटी खमीरी नहीं होनी चाहिए और कटोरे का समान अंगूर का रस ही हो, जैसे भोज की स्थापना में यीशु ने इस्तेमाल किया था।

भोज देने से पहले

वचन यह नहीं बताता कि भोज दिए जाने से पहले क्या कहा जाना चाहिए। यीशु ने प्रेरितों को संक्षेप में यह कहते हुए कि रोटी उनके लिए दी गई उसकी देह है, उन्हें संक्षेप में इसका अर्थ बताया (लूका 22:19; 1 कुरिन्थियों 11:24)। रोटी खाने के बाद उसने कहा कि कटोरा पापों की क्षमा के लिए बहाया गया नई वाचा का उसका लहू है (मत्ती 26:28; मरकुस 14:24; लूका 22:20; 1 कुरिन्थियों 11:25; देखें प्रकाशितवाक्य 1:5)।

भोज लिए जाने से पहले गाना गाने की कोई बात नहीं है। गाना आराधना के लिए स्वीकृत माना गया है (देखें इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16), इस कारण भाग लेने वालों को यीशु पर ध्यान लगाने में सहायता के लिए चुनिन्दा गीत सही हो सकता (सकते) हैं जो उसके जीवन, प्रेम, बलिदान, पुनरुत्थान और भक्ति पर हो।

यीशु पर ध्यान लगाने और आत्मिक सामर्थ के लिए उन्हें उसके और निकट लाने में आराधकों की सहायता के लिए कोई भी संदेश काम करेगा। मण्डली को प्रभु-भोज देने के लिए तैयार करने के लिए बोलने वाले व्यक्ति को इन बातों का ध्यान रखना चाहिए:

- वचन या आयतों को ध्यान से चुने, उन्हें यीशु पर लागू करें और उनके आत्मिक अर्थों पर चर्चा करें।
- समझें कि उसका उद्देश्य यीशु पर ध्यान लगाने में होना चाहिए। अपनी ओर ध्यान न खींचें।
- उसे मसीह की महिमा और उसके क्रूस पर दिए जाने को ध्यान में रखा जाना चाहिए

(1 कुरिन्थियों 2:2), क्योंकि वही भोज के केन्द्र में है।

रोटी और कटोरा देना

दूसरी शताब्दी के आरम्भ में, प्रभु की मेज़ प्राचीन या ऐल्डर ही लगाते थे। लगभग 110 ईस्वी में इग्नेशियस ने बताया:

> कलीसिया से सम्बन्धित बातें बिशप को छोड़ कोई अन्य व्यक्ति न करे। वह एक मान्य युक्रित हो जो बिशप या उसके अधीन हो जिसे उसने यह काम दिया हो।[1]

200 इस्वी के लगभग रोमी हिपोलिटस, जिसने आरम्भिक कलीसिया के सम्बन्ध में एक बड़ी पुस्तक और कई लेख लिखे, ने प्रार्थना का एक नमूना लिखा और कहा:

> और बिशप पहले कहे गए के अनुसार पहले धन्यवाद दे। यह उसके लिए किसी संक्षिप्त रूप के साथ प्रार्थना दोहराना आवश्यक नहीं है, कोई उसे रोकेगा नहीं।[2]

प्रभु-भोज केवल ऐल्डरों द्वारा दिए जाने में कोई बुराई नहीं है, पर ऐसा करना ज़बर्दस्ती नहीं है। नया नियम न तो बताता है और न ही उदाहरण देता है कि मण्डली में मेज़ पर कौन लोग सेवा करते हैं, इस कारण कोई भी विश्वासी मसीही पुरुष इस सेवा को कार्य से कर सकता है। स्त्रियों को शामिल नहीं किया गया क्योंकि उन्हें मण्डली को सम्बोधित करने (1 कुरिन्थियों 14:34, 35) या आराधना में मुख्य भूमिका निभाने का अधिकार नहीं है (1 तीमुथियुस 2:11, 12)। आरम्भिक कलीसिया का इतिहास इस तथ्य से मेल खाता है कि सार्वजनिक सभाओं में स्त्रियां नहीं बल्कि पुरुष अगुआई किया करते थे।

नया नियम की रोटी और कटोरा लोगों को कैसे दिया जाए। नीचे दिए उदाहरणों सहित मण्डलियां इसे अलग अलग प्रकार से लेती हैं:

- सदस्य भोज लेने के लिए मेज़ के आगे आ सकते हैं।
- देने वाले मण्डली के आगे से पीछे तक (या पीछे से आगे तक) प्रतीक ले सकते हैं।
- प्रार्थना के बाद, सदस्य रोटी थोड़ा मण्डली से लेकर आगे से पीछे तक सदस्य के पास पहुंचा सकते हैं।
- कई मण्डलियां एक साथ रोटी खाने और बाद में एक साथ कटोरे में से पीने के लिए सबको बांटे जाने के बाद प्रतीक्षा करती हैं।

लिए जाने का क्रम

यीशु ने रोटी तोड़ी और इसे प्रेरितों को दिया, और फिर उन्होंने कटोरे में से लिया। यीशु के उदाहरण में एक विशेष क्रम, जिसे आज माना जाना चाहिए। (पढ़ें मत्ती 26:26, 27; मरकुस 14:22, 23; लूका 22:17-20; 1 कुरिन्थियों 11:23-25.)

रोटी के साथ उसने इस प्रकार किया:

- इसे लिया।

- इसे आशीष दी, या इसके लिए धन्यवाद दिया।
- इसे तोड़ा।
- इसे प्रेरितों को दिया।
- उन्हें अपने स्मरण के लिए इसे खाने को कहा।

फिर उसने कटोरे के साथ इस प्रकार किया:

- इसके लिए धन्यवाद दिया, इसे लेने के बाद इसे प्रेरितों को पहले दिया।
- उन्हें अपने स्मरण में इसे पीने को कहा।

यह बात कि यीशु ने देने से तुरन्त पहले रोटी तोड़ी भोज के ''रोटी तोड़ने'' (प्रेरितों 2:42) या ''रोटी तोड़ना'' (प्रेरितों 20:7; देखें 1 कुरिन्थियों 10:16) के रूप में भोज का कारण नहीं मानी जानी चाहिए। अधिक सम्भावना यह है कि इस वाक्यांश का इस्तेमाल इसलिए हुआ क्योंकि उसने इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल भोजन खाने के लिए होता था, और यहां यह प्रभु का भोजन है।

भोज के लिए प्रार्थना

प्रभु-भोज के दौरान यीशु की प्रार्थना के सम्बन्ध में दो यूनानी शब्दों का इस्तेमाल हुआ: *eulogeo* अर्थात ''आशीष'' (जिससे अंग्रेज़ी शब्द ''eulogy'') निकाला है और *eucharisteo* अर्थात ''धन्यवाद'' (जिससे अंग्रेज़ी शब्द ''यूखरिस्त'' मिला है)।

मत्ती और मरकुस के अनुसार, यीशु ने रोटी तोड़ी ''आशीष दी'' (*eulogeo*): ''यीशु ने रोटी दी, और आशीष मांगकर तोड़ी'' (मत्ती 26:26); ''उसने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ती'' (मरकुस 14:22)।

लूका और पौलुस ने लिखा कि यीशु ने रोटी के लिए ''धन्यवाद'' किया (*eucharisteo*): ''उसने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी'' (लूका 22:19); ''प्रभु यीशु ने ... रोटी ली; और धन्यवाद करके उसे तोड़ा ...'' (1 कुरिन्थियों 11:23ख, 24क)।

कटोरे के लिए प्रार्थना करते हुए यीशु ने ''धन्यवाद'' दिया। ''यूखरिस्त'' (मत्ती 26:27; मरकुस 14:23)। पौलुस ने यीशु के कटोरे को लेने के लिए इसे आशीष देने या धन्यवाद देने का उललेख नहीं किया (1 कुरिन्थियों 11:25)।

''आशीष'' और ''धन्यवाद'' का इस्तेमाल पहली बार एक दूसरे के स्थान पर होता है। कारण यह है कि (यूलोजियो) का अर्थ धन्यवाद करना या ''विशेष समर्थन दिए जाने के लिए आभार व्यक्त करना'' है। मत्ती ने चार हज़ार लोगों को खिलाने में रोटी के टुकड़ों को तोड़ने से पहले की गई यीशु की प्रार्थना के सम्बन्ध में ''धन्यवाद देना'' (*यूखरिस्तयो*) इस्तेमाल किया (मत्ती 15:36-38), जबकि मरकुस ने (मरकुस 8:7-9)। जबकि मरकुस ने ''आशीष दी'' (*eulogeo*) का इस्तेमाल किया।

रोटी और कटोरे में भाग लेने से पूर्व की गई प्रार्थनाएं क्रूस पर यीशु के बलिदान की आशीष के लिए परमेश्वर का आभार व्यक्त करते होनी चाहिए। वे व्यक्तिगत खामोशी से की जाने वाली प्रार्थनाएं नहीं बल्कि शेष मण्डली द्वारा कही गई प्रार्थना के अर्थ के साथ होनी चाहिए।

ऐसी अगुआई में प्रार्थना करने का लक्ष्य लम्बी नहीं बल्कि अर्थपूर्ण प्रार्थना होना चाहिए। हर सार्वजनिक प्रार्थना में सादगी और संजीदगी का होना आवश्यक है।

कुछ लोग मण्डली को दिए जाने से पहले रोटी और कटोरे दोनों के लिए एक साथ धन्यवाद की प्रार्थना करते हैं। रोटी से पहले प्रार्थना करने और फिर कटोरे से पहले प्रार्थना में अगुआई करने का यीशु का अवश्य ही कोई अच्छा कारण होगा। सबसे उपयुक्त बात उसके नमूने का अनुसरण करना और रोटी और कटोरे दोनों में से लेने से पहले धन्यवाद देना है।

किसके लिए?

क्या रोटी और कटोरा बच्चों को, गैर मसीही लोगों को और आगन्तुकों को दिया जाना चाहिए? कई डिनोमिनेशनें आगन्तुकों को प्रभु-भोज लेने की अनुमति देने से पहले सिफ़ारिशी चिट्ठी मांगते हैं। परन्तु यह अनावश्यक है। अन्य भोज केवल उन्हीं को देते हैं जिनका नाम कलीसिया के सदस्यों में हैं। फिर से नये नियम में ऐसी कोई प्रथा नहीं मिलती।

अनजान आगन्तुक हो सकते हैं, इस कारण किसी को प्रभु-भोज का उद्देश्य बताना चाहिए और यह कि इसे किसे लेना चाहिए। जिन लोगों को भोज पाने का अधिकार है वे मसीह की एक देह (1 कुरिन्थियों 10:16, 17; 12:13), अर्थात कलीसिया (कुलुस्सियों 1:18) के लोग हैं। मसीह में बपतिस्मा लेने के कारण (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27) उस देह में हैं (रोमियों 12:5)।

जिन बच्चों का बपतिस्मा नहीं हुआ है उन्हें छोड़ दिया जाना चाहिए। उपस्थित मसीही लोगों अपने आपको जांचकर इसमें योग्य ढंग से भाग लें (1 कुरिन्थियों 11:27, 28)। उस व्यक्ति के अपवाद के साथ जिसे मण्डली ने संगति से निकाल दिया है, हर मसीही को यह प्रतीक दिया जाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 5:11)।

भोज का समय

वचन सप्ताह का दिन बताता है कि प्रभु-भोज कब खाया जाए, पर समय नहीं। त्रोआस की कलीसिया रविवार यानी सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा हुई थी (प्रेरितों 20:6, 7)। समय का इतना महत्व नहीं है इस कारण मण्डलियां अपनी सुविधा के अनुसार सप्ताह के पहले दिन में इकट्ठा होने का कोई भी समय तय कर सकती हैं। मसीहियत की आरम्भिक शताब्दियों में कुछ मसीही लोग काम पर जाने से पहले सुबह सुबह इकट्ठे होते थे।

भोज सभा के दौरान किसी भी समय यानी आरम्भ में, बीच में या आराधना के अन्त के निकट लिया जा सकता है। कई बार पूरी आराधना को प्रभु-भोज के इर्द गिर्द रखना सहायक हो सकता है। गीत, वचन और प्रवचन परमेश्वर के बलिदान के मेमने के रूप में यीशु पर केन्द्रित हो सकते हैं जिसे उसकी मेज़ के गिर्द हमारे इकट्ठा होने से महिमा दी जा रही है।

यदि कुछ सदस्य रविवार प्रात: की सभा में इकट्ठा नहीं हो पाते तो मण्डली आम तौर पर उन सदस्यों के लिए दिन में किसी और समय भोज दिए जाने का प्रबन्ध करती है।

कई मसीही उचित कारणों से जैसे बीमार होने, घायल होने, अपंग होने या अस्पताल में होने के कारण भाग नहीं ले सकते। निश्चय ही जो नहीं आ सकते उन्हें अपने प्रभु के साथ

सहभागिता करने और आत्मिक सामर्थ पाने का अवसर देना सहायक है। सदस्यों के एक समूह के लिए उन प्रतीकों को उनके पास ले जाना और उन्हें गीतों, प्रार्थनाओं, वचन और संक्षेप में सबक देकर प्रोत्साहित करना अच्छा है। ये सभी लोग परमेश्वर के लोगों के आत्मिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

जो सदस्य केवल प्रभु-भोज में भाग लेने के लिए आने का निर्णय लेते हैं और फिर चले जाते हैं वे आराधना के अन्य पहलुओं और मसीही संगति के महत्व को अनदेखा कर रहे हैं। आपातकाल में यह छूट मिल सकती है।

सारांश

प्रभु के दिन प्रभु-भोज मसीही सभा का एक आवश्यक और महत्वपूर्ण भाग है। इसे देने वाले और इसमें भाग लेने वालों को रोटी तोड़ने और कटोरे में से पीने की गम्भीरता को समझना चाहिए। जो यीशु के शरीर और लहू का प्रतीक है। प्रभु-भोज को मनाने वाले सभी लोग यह समझकर अच्छा करेंगे कि यीशु यह देख रहा है और उसे ध्यान है कि रोटी के खाने और कटोरे में से पीने में उसे किस प्रकार से याद किया जा रहा है।

टिप्पणियां

[1]इग्नेशियस *स्मिरनियंस* 8:4, 5. [2]हिप्पोलिटुस *अपोस्टलिक ट्रेडिशंस* 4.10.

परम्पराएं और प्रभु-भोज

> फरीसियों और ग्रन्थियों ने उससे पूछा, ''कि तेरे चेले क्यों पुरनियों की रीतों पर नहीं चलते, और बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं? उस ने उन से कहा; कि यशायाह ने तुम कपटियों के विषय में बहुत ठीक भविष्यवाणी की, जैसा लिखा है:
>
> कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं,
> पर उन का मन मुझ से दूर रहता है।
> और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं,
> क्योंकि मुनष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।
>
> क्योंकि तुम परमेश्वर कीं आज्ञा को टालकर मनुष्य की रीतियों को मानते हो। और उस ने उन से कहा; तुम अपनी रीतियों को मानने के लिए परमेश्वर की आज्ञा कैसे अच्छी तरह टाल देते हो'' (मरकुस 7:5-9)।

सदियों से प्रभु-भोज परम्परा से घिरा हुआ है। अलग-अलग तरह की परम्पराएं या रीतियां पाई जाती हैं। उन में से कुछ गलत हैं, और कुछ में कोई बुराई नहीं है। ''रीत'' (*paradosis*) शब्द का इस्तेमाल उसके लिए किया जाता है जिसको सौंपा गया है।

तीन प्रकार की परम्पराएं या रीतें हैं।

(1) *परमेश्वर की रीति* परमेश्वर की प्रेरणा पाए लोगों के द्वारा दी गई थी। इन शिक्षाओं को

सावधानी पूर्वक माना जाना चाहिए, क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से हैं।

> हे भाइयो, मैं तुम्हें सराहता हूं, कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो: और जो व्यवहार मैं ने तुम्हें सौंप दिए हैं, उन्हें धारण करते हो (1 कुरिन्थियों 11:2)।
>
> जिन्होंने प्रभु यीशु को और भविष्यवक्ताओं को भी मार डाला और हम को सताया, और परमेश्वर उन से प्रसन्न नहीं; और वे सब मनुष्यों का विरोध करते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:15; देखें 3:6)।

(2) *मनुष्यों की परम्पराएं जो परमेश्वर की परम्पराओं से उलझती हैं।* मनुष्यों के व्यवहार हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं को दरकिनार करते हैं (मरकुस 7:13)। इनके कुछ उदाहरण प्रभु-भोज में दाख के रस की जगह पानी का इस्तेमाल (मत्ती 26:28, 29) और बपतिस्मे में डुबकी की जगह पानी का छिड़काव हैं (रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:12)। यह मनुष्य का अविष्कार हैं। इस प्रकार की परम्पराएं लोगों को परमेश्वर की सच्चाई को मानने से रोकती हैं (तीतुस 1:14)। परमेश्वर को ऐसी बातें अस्वीकार्य हैं (मत्ती 15:2-6; मरकुस 7:3, 7-13; गलातियों 1:14; कुलुस्सियों 2:8)।

(3) *मनुष्यों की परम्पराएं जो परमेश्वर की आज्ञाओं को दरकिनार नहीं करती* उसमें परिवार की परम्पराएं, राष्ट्रीय परम्पराएं, गैर धार्मिक छुट्ठी की परम्पराएं या नये नियम की शिक्षाओं को मानने के परम्परागत ढंग हो सकते हैं। इन के उदाहरणों में कलीसिया के इकट्ठा होने के दिन का समय, आराधना की गतिविधियों का प्रबन्ध और घर में खाया जाने वाला भोजन है (रोमियों 14:2, 3; कुलुस्सियों 2:16; 1 तीमुथियुस 4:1-4)। हम कई परम्पराओं को मानते हैं जो नये नियम की शिक्षाओं में जोड़ती, उनसे निकालती या उन्हें बदलती नहीं हैं परन्तु हम उन्हें दूसरों पर न थोपें।